1934F Seth Tikam Chandra Ji Soni

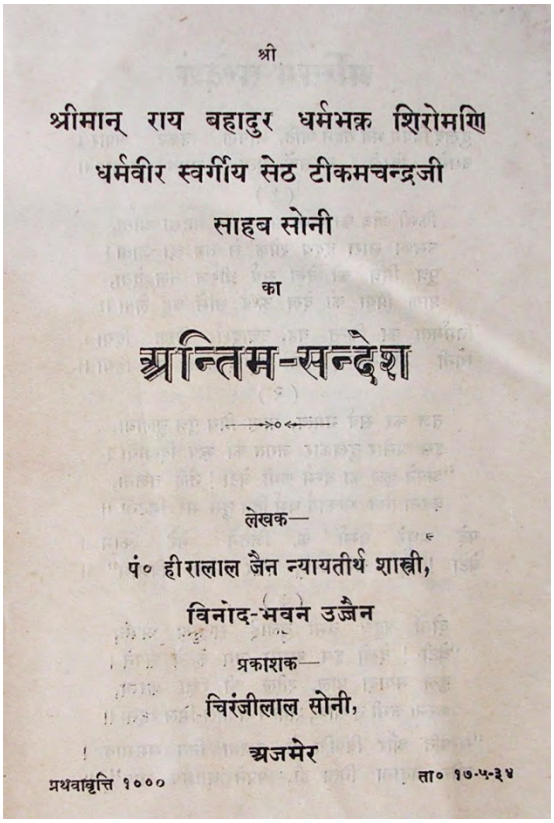

श्री

श्रीमान् राय बहादुर धर्मभक्त शिरोमणि

धर्मवीर स्वर्गीय सेठ टीकमचन्द्रजी

साहब सोनी

का

अन्तिम-सन्देश

लेखक—

पं० हीरालाल जैन न्यायतीर्थ शास्त्री,

विनोद-भवन उज्जैन

प्रकाशक—

चिरंजीलाल सोनी,

अजमेर

प्रथवावृत्ति १००० ता० १७-५-३४

अन्तिम-सन्देश

दुखद विषम भव गहन अति, भीषण विकट अपार।
उसमें विरले करसकें, मृत्यु समय उद्धार ॥

(१)

किसी जीव का अन्त समय जब सहसा आता,
उसका सारा हृदय शोक से तब छा जाता।
पुत्र मित्र को देख सर्व धीरज तज देता,
प्राण प्रिया को देख ऊर्ध्व सांसें बहु लेता ॥
निर्ममता का किन्तु वह, उच्चादर्श दिखा दिया।
सोनी टीकमचन्द्र ने, गद्गद होता सुन हिया ॥

(२)

तज कर सर्व ममत्व, प्राण प्रिय पुत्र बुलाया,
इस असार दुखकार जगत का रूप दिखाया।
"अपने कुल का धर्म्म कभी बेटा! नहिं तजना,
करना नित सत्कार्य धर्म हित तुम मर मिटना ॥
पड़े अधूरे धर्म्म के, जितने मेरे काम।
बेटा! पूरा कर उन्हें, फिर लेना विश्राम" ॥

(३)

दोनों बहुयें तभी बुलाईं सन्मुख अपने,
"बेटी! देखो इस असार जग के ये सपने।
कुल मर्यादा पाल, शील की रक्षा करना,
करना कभी न शोक, शान्ति से हिल-मिल रहना ॥
"सम्पति और विपत्ति में, रखना नित समभाव।
और बढ़ाना नित्य ही, अपने धार्मिक भाव" ॥

(४)

तदनु बुलाई प्रिय अनूप औ तेज कुमारी,
बोले अन्तिम घड़ी आज आगई हमारी।
"इस जीवन में दोनों बहिनें मिल कर रहना,
वंशोचित सत्कार्य प्राण जाते तक करना ॥
तुम सब से चिरकाल को, होता आज वियुक्त हूँ।
सदा सुखी दोनों रहो, और अधिक मैं क्या कहूँ" ॥

(५)

प्राण-प्रिय का हाल देख कर सेठानीजी,
शोकाकुल हो वचन बोलतीं आँखें भीजीं।
नाथ, बनाते क्यों अनाथ हो, मुझ दीना को,
क्या सोचा है आज बता दो, निश्चय मुझको ॥
"बोले तब गम्भीर हो, विह्वल क्यों होती प्रिये।
जाता हूँ तज कर तुम्हें, धीरज रखना निज हिये" ॥

(६)

दौड़ पड़े तब सभी बंधु औ नौकर-चाकर,
जोड़े दोनों हाथ, आँख से नीर बहाकर।
देख सभी को पूज्य सेठजी, यों घबराते,
बोले हर्षित चित्त, सभी को यों समझाते ॥
"आया है सो जायगा, यह है जगत् स्वभाव।
क्षमा करें सब जन मुझे, रखें न विकृत भाव" ॥

(७)

"चलो आतमाराम चलो" यह नाद गुंजाया,
इष्ट देव को सुमर, उसी में ध्यान लगाया।
अशन-पान औ, औषध तक को तबही छोड़ा,
शय्या को भी छोड़, परिग्रह से मुख मोड़ा ॥
"चलो आतमाराम" कह, होकर के निर्द्वंद।
स्वर्ग-धाम को चल दिये, श्रीयुत टीकमचंद ॥